Lecture-5

Topic-Meaning Nature and Scope of Comparative politics

D-2(Sub.)

Date-24-4-2021

By Rahul Kumar Jha

तुलनात्मक राजनीति के अर्थ, प्रकृति और क्षेत्र :-

तुलनात्मक राजनीति के विषय क्षेत्र को लेकर अब भी विद्वानों में मतभेद है, अर्थात इसका विषय-क्षेत्र अब भी समीक्षण की अवस्था में है। इसके विषय-क्षेत्र की प्रमुख समस्या यह बन जाती है कि तुलनात्मक राजनीति में कौन-कौन से विषय सम्मिलित किए जाएँ और कौन-कौन से विषय इसके अध्ययन क्षेत्र से बाहर रखे जाएँ।

जीन ब्लोंडेल ने क्षेत्र संबंधी विवाद को दो बातों से संबंध बताया :-

(i) सीमा संबंधी विवाद तथा

(ii) समकों तथा व्यवहार के संबंधों का विवाद

सीमा संबंधी विवाद :- सभी राजनीतिविज्ञ इस बात पर तो सहमत हैं कि तुलनात्मक राजनीति का संबंध राष्ट्रीय सरकारों से है और इसमें भी सिर्फ सरकारी ढाँचों का ही अध्ययन नहीं, वरन् सरकारों के कार्यकलापों और गैर-राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक कार्यों का अध्ययन आवश्यक रूप से सम्मिलित रहता है। लेकिन विवाद इस बात पर है कि तुलना से संबंध राजनीतिक कार्यों कार्यकलापों से क्या अर्थ समझा जाए? इस संबंध में दो दृष्टिकोण हैं - कानूनी दृष्टिकोण और व्यावहारिक दृष्टिकोण।

कानूनी या संस्थागत दृष्टिकोण :- इस दृष्टिकोण के अनुसार तुलनात्मक राजनीति में सिर्फ संविधानों द्वारा स्थापित सरकारी संरचना का तथा संविधान द्वारा निश्चित किए गए राजनीतिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन ही किया जाना चाहिए। इस विवाद के समर्थकों का कहना है कि संविधान ही सरकार के ढांचे का संगठन करता है

और इसी के द्वारा हर संस्था के कार्यों का नियमन होता है। अतः तुलना राष्ट्रीय सरकारों के आचार, संविधान तथा इनके द्वारा नियत कार्यकलापों की ही होनी चाहिए।

व्यावहारिक दृष्टिकोण :- इसके अनुसार तुलनात्मक राजनीति में सिर्फ राजनीतिक व्यवस्था का औपचारिक अध्ययन और तुलना पर्याप्त नहीं। वास्तव में राजनीतिक व्यवस्था किस प्रकार व्यावहारिक बनाती है तथा राजनीतिक संस्थाओं का वास्तविक व्यवहार क्या है, यह प्रमुख बात है। जीन ब्लोण्डेल ने तो राजनीति के व्यावहारिक पक्ष को आधारभूत व मौलिक माना है। उनका कहना है कि तुलनात्मक राजनीति को कानूनी परिधि में न बंधकर उससे बाहर निकलना है। व्यवहारवादियों की मान्यता है कि तुलनात्मक राजनीति में राष्ट्रीय सरकारों तथा गैर-राजकीय संस्थाओं के राजनीतिक व्यवहार से संबंध समस्त तथ्य एकत्रित करके विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं में तुलना करनी चाहिए।

CHAPTER CONTINUES....